“सत्य खोजो”

खोजना है सत्य हमको,

और असत्यों में पड़े हम।

है अखंडित सत्य केवल,

और खण्डों में पड़े हम।।

चेतना भंडार है वह,

और अचेतन में पड़े हम।

ऊपर वाला कहते उसको,

नीचे वालों में पड़े हम।।

है अनामी जानते सब,

पाँच नामों में पड़े हम।

लोक चौथा जानना है,

तीन लोकों में पड़े हम।।

एक है केवल अकेला,

और अनेकों में पड़े हम।

तत्व कोई भी नहीं है,

और तत्वों में पड़े हम।।

अलग हमसे है नहीं,

और भेद भक्ती में पड़े हम।

रूप कोई है नहीं,

और बुतपरस्ती में पड़े हम।।

जानना अपरोक्ष भक्ती,

अंधभक्ती में पड़े हम।

पूजा हो सकती नहीं,

और पूजा में पड़े हम।।

मन के पर्दे खोलना सब,

इन्हीं पर्दों से ढके हम।

पर्दों से है मुक्त होना,

इन्हीं पर्दों में फंसे हम।।

है जगाना जीव को,

देवों को जगाने में पड़े हम।

जीतना संसार को है,

भागते संसार से हम।।

ठहरना है मन, सुरत को,

भागते संसार में हम।

केवल सद्गुरु खोजना है,

लोभ लालच में फंसे हम।।

आत्म घट पर खोजना है,

अंदर, बाहर खोजते हम।

है विदेहीं जानते सब,

देहों में क्यों खोजते हम।।

धार गिरती आत्मघट पर,

मन को सन्मुख कीजिये।

सन्मुख तुम्हारे आत्मा,

मन को पूरण कीजिये।।

आत्मघट कैसे हो परगट,

शून्य मन को कीजिये।

सुरत स्थिर, निरत स्थिर,

जीव, आतम कीजिये।।

सुरेशा दयाल

ब्रम्हज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क सूत्र - (9984257903)